रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

आर्थिक विचारमें दुःखद भूल

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ — सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई — अंक २६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २७ अगस्त, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

'नींवमें से निर्माण' — ५

[ता० १३–८–'५५ के अंकके अनुसंधानमें]

द्वितीय पंचवर्षीय योजनाकी रूपरेखामें यह अनुमान लगाया गया है कि योजना-कालमें राष्ट्रीय आयमें लगभग २५ से २७ प्रतिशतकी वृद्धि होगी। जाहिर है कि यह वृद्धि हमारी अर्थ-रचनाके विभिन्न क्षेत्रोंमें अेकसी नहीं होगी। पूंजी-प्रधान भारी अुद्योगोंमें ज्यादा वृद्धि होगी, जब कि खेती या छोटे पैमानेके अुद्योगोंमें कम वृद्धि होगी। योजनाकी रूपरेखामें यह हिसाब लगाया गया है कि (१९५२-५३ की कीमतोंके स्तर पर) खेती और अुसके सहायक अुद्योगोंमें लगा हुआ हर आदमी कुल रु० ५७१ की सम्पत्ति पैदा करेगा, जब कि खानों और कारखानोंमें यह रकम रु० २६३२ तक पहुंचेगी। लेकिन दोनों क्षेत्रोंकी औसत आय केवल रु० ८४० ही होगी। हम अच्छी तरह जानते हैं कि अैसी बातोंमें आयके औसत आंकड़े सच्ची या वास्तविक तस्वीर पेश नहीं करते। आबादीके बहुत बड़े भागकी आयमें दरअसल महत्त्वपूर्ण वृद्धि नहीं होगी, अिसलिअे अुन्हें अपना जीवन-मान अुठानेके कम मौके मिलेंगे। सामाजिक न्यायका यह तकाजा है कि आज जिन लोगोंका जीवन-मान नीचेसे नीचा है, अुनकी आयमें पहले काफी वृद्धि करनेका विशेष लक्ष्य बनाया जाना चाहिये, ताकि समाजवादी व्यवस्थाकी ओर अुनका बढ़ना निश्चित हो सके।

दूसरी पंचवार्षिक योजना सार्वजनिक क्षेत्रमें राज्यकी पूंजी और खानगी क्षेत्रमें खानगी पूंजीके जरिये पूंजी-प्रधान रहेगी, अिसलिअे आजकी हालतोंमें हमारी गरीब जनताके खयालसे जिस निहायत जरूरी हद तक अिस लक्ष्यकी ओर अुसे बढ़ना चाहिये, अुस हद तक वह नहीं बढ़ सकती। पूंजी, चाहे खानगी क्षेत्रमें हो या सार्वजनिक क्षेत्रमें हो, आम तौर पर पूंजीवादी ढंगसे ही काम करेगी — यानी वह धनी लोगोंको अधिक धनी और गरीबोंको अधिक गरीब बनायेगी।

अिसलिअे 'नींवमें से निर्माण' की योजना अपने विकास-कार्यक्रममें अैसी दिशा अपनाती है जो अिस पूंजीवादी दिशासे बिलकुल भिन्न है, सीधे नीचीसे नीची आयवाले वर्गोंको सबसे पहले राहत पहुंचानेका ध्येय अपने सामने रखती है और अिस तरह सर्वोदयका रास्ता अपनाती है, जो छोटेसे छोटे आदमीके दावोंकी तरफ सबसे पहले ध्यान देता है। यहां अुसकी दृष्टि थोड़ेमें अिस तरह बताअी जा सकती है:

> "सामाजिक दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण आर्थिक प्रयत्नका मुख्य अुद्देश्य काम-धन्धा बढ़ाना है, क्योंकि अिसके बिना बढ़े हुअे अुत्पादनके लाभोंका न्यायपूर्ण बंटवारा संभव नहीं है। अिसलिअे अिस ध्येयको सिद्ध करनेके लिअे केवल किसी 'सेक्टर' की आर्थिक क्षमता या अुत्पादन क्षमताका ही विचार करना जरूरी नहीं है, बल्कि अुसके कार्योंकी सामाजिक प्रतिक्रिया और परिणामोंका भी विचार करना जरूरी है। . . . दूसरे शब्दोंमें, आम तौर पर यह सिद्धान्त स्वीकार किया जा चुका है कि किसी 'सेक्टर' को अुत्पादक जिम्मेदारी सौंपते समय अिस बातका ध्यान रखना चाहिये कि अुसकी आर्थिक क्षमताका सामाजिक महत्त्वके साथ कारगर रूपमें मेल बैठे।"

जैसा कि हम देख चुके हैं, 'नींवमें से निर्माण' के विकास-कार्यक्रमका आधार स्वतंत्र रूपसे काममें लगी हुअी संयुक्त पारिवारिक अिकाअियां या अुनकी छोटी छोटी सहकारी समितियां हैं। अिसलिअे वह प्रत्येक परिवारके लिअे अल्पतम वार्षिक आयकी योजना करता है, जो "मानव जीवन-मान कायम रख सकती है।"

अिस जीवन-मानकी ठोस व्याख्या नीचेके कोष्ठकमें दी गअी है, जो अेक परिवारकी वार्षिक आवश्यकताओंको बताता है:

वार्षिक पारिवारिक आवश्यकतायें

वस्तुअें	रोजकी जरूरी मात्रा	मानी हुअी कीमत	कुल रुपये
(क) भोजन			
१. अनाज	८० औंस	रु० ३००	
२. दालें	२० औंस	" ५०	
३. दूध	६० औंस	" १८०	
४. शाकभाजी (हरी व बिना पत्तेकी)	४० औंस	" २००	
५. तेल और चर्बी	१२ औंस	" ३५०	
६. मछली, मांस, अंडे	२० औंस	" ४५०	
७. ताजे फल और सूखे मेवे	३० औंस	" १५०	
८. शक्कर-गुड़	२० औंस	" १००	
९. मसाले	—	" २०	१८००–०–०
(ख) कपड़े पहननेके और दूसरे		" २५०	
(ग) मकानों और अिमारतोंकी मरम्मत और रक्षा		" १७५	
(घ) स्वास्थ्य और दवा		" १७५	
(ङ) बुढ़ापेका बीमा		" १००	
(च) शिक्षा, किताबें वगैरा		" २००	
(छ) मेहमानदारी, मनोरंजन और अन्य विविध खर्च		" ३००	१२००–०–०
		कुल रु०	३०००–०–०

www.vinoba.in

यह कोष्ठक बताता है कि "प्रत्येक परिवारकी औसत वार्षिक आय रु० ३००० से कम नहीं होनी चाहिये। अिस लक्ष्यकी तुलनामें आज भारतमें प्रत्येक परिवारकी औसत वार्षिक आय रु० १३२० से अधिक नहीं है। पारिवारिक आयका यह स्तर आयके बंटवारेकी भयंकर विषमताओं और अुनके फलस्वरूप पैदा होनेवाले पारिवारिक अुपभोगके स्तरोंके लम्बे-चौड़े फर्कोंकी बिलकुल अुपेक्षा करता है। रचनात्मक कार्यकर्ताओंका अनुभव और अनेक जांचें यह बताती हैं कि गांवों और शहरोंमें बड़ी संख्यावाले अैसे परिवार हैं जिनकी औसत मासिक आय रु० २५ और अुससे भी कम है।" (नींव निर्माण, पैरा ४६)

"देशके हर परिवारके लिअे रु० ३००० की अल्पतम औसत आयको निश्चित बनानेके लिअे यह जरूरी है कि प्रत्येक परिवारके लिअे अुत्पादनके काफी अुपयुक्त साधनोंकी व्यवस्था करके अुनकी अुत्पादक शक्तिको बढ़ाया जाय, व्यवस्थित और संगठित सहायताके जरिये अुन्हें यथाशक्ति काम करनेके योग्य बनाया जाय, अैसी व्यवस्था की जाय जिससे अुन्हें कच्चा माल प्राप्त हो, आवश्यक पैसा अुधार मिल सके, और वे अपनी बनाअी हुअी चीजें बाजारमें बेच सकें। लेकिन यह सहायता अैसे ढंगसे दी जानी चाहिये कि अुनमें पराधीनताके बजाय स्वावलंबनका विकास हो।" (पैरा ४८)

अिसके बाद योजना अिस तरहके विकासके लिअे पूंजीकी जरूरतोंकी जांच करती है और यह मान लेती है कि "संपूर्ण अर्थ-रचनामें १:१ के अनुपातमें औसत अुत्पादन हो यह अवास्तविक धारणा नहीं कही जा सकती। अिस आधार पर प्रति परिवार रु० ३००० की वार्षिक आयके लिअे प्रति परिवार रु० ३००० की औसत पूंजी लगाना जरूरी होगी।" (पैरा ४९)

योजना आगे चलकर कहती है कि "विकासके किसी कार्यक्रमको व्यावहारिक बनानेके लिअे यह जरूरी है कि अेक तरफ अुसका मेल देशकी आवश्यक पूंजी प्राप्त करनेकी क्षमताके साथ और दूसरी तरफ नीचीसे नीची आयवाले लोगोंकी जरूरतोंके साथ बैठाया जाय।" (पैरा ५०)

अैसा करनेके लिअे, "यह जरूरी है कि देशमें आयके बंटवारेके स्वरूपकी, नीचीसे नीची आयवाले वर्गोंके परिवारोंकी संख्याकी तथा अुनकी मौजूदा समस्याओं और क्षमताओंकी बिलकुल निश्चित जानकारी प्राप्त की जाय, और खास तौर पर अुनके अनुकूल बनाया हुआ विकास-कार्यक्रम शुरू किया जाय। अैसी प्रक्रिया अपने आप प्रस्तावित विकास-कार्यक्रमको विभिन्न मंजिलोंमें बांट देती है, पूंजी लगानेके कार्यको अमुक अवधिमें फैला देती है और तात्कालिक जरूरतोंको काम चलाने लायक अनुपातमें घटा देती है।" (पैरा ५०)

'नींवमें से निर्माण' पुस्तिका कहती है कि भारतमें परिवारोंके आय-वार बंटवारेके सम्बन्धमें प्रामाणिक आंकड़े प्राप्त नहीं हैं। लेकिन जो भी आंकड़े प्राप्त हैं अुन परसे वह नीचेका कोष्ठक देती है :

परिवारोंका बंटवारा

वार्षिक खर्च (रुपयोंमें)	परिवारोंकी संख्या (लाखमें)	कुल संख्याका प्रतिशत
६०० तक	१६३.२	२०.४
६०० से १२०० के बीच	२४९.६	३१.२
१२०० से १८०० के बीच	१६८.८	२१.१
१८०० से २४०० के बीच	८३.२	१०.४
२४०० से ३६०० के बीच	७६.०	९.५
३६०० से अूपर	५९.२	७.४
	८००.०	१००.०

और वह "अूंची आयवाले वर्गोंको लेनेसे पहले गरीबसे गरीब परिवारोंको अगले अूंचे स्तर पर पहुंचानेकी जरूरत पर विकास-कार्यक्रमके अमली स्वरूपको आधारित करती है, क्योंकि अैसा स्वरूप क्रमशः आर्थिक और सामाजिक समानताके क्षेत्रको बढ़ाता है और क्योंकि अुसमें पहले काम पहले करनेकी नीति केवल अुत्पादन पर नहीं बल्कि जरूरतों पर आधार रखती है।" (पैरा ५२)

और यह योजना अूपर बताअी गअी नीतिके अनुसार अपने संपूर्ण कार्यक्रमको अनुकूल अवस्थाओंमें बांटती है, अुसकी आर्थिक जिम्मेदारियोंको स्पष्ट करती है और अिसके लिअे आवश्यक संगठनका प्रकार बताती है।

६-८-'५५ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

दूसरी योजनाके बारेमें अेक सूचना

हमारे देशमें आबादीका सबसे ज्यादा दबाव जमीन पर है जिसका कारण ग्रामोद्योगोंका न होना है। जमीन हमारे यहां प्रति व्यक्ति .८५ अेकड़ है, जब कि केनेडा और रूसमें वह ६ से ३ अेकड़ तक है। ८०% जनताकी जीविकाका आधार जमीन ही है, और चूंकि पानी साल भर हमेशा नहीं मिलता अिसलिअे हरअेकको पूरा काम नहीं मिलता जिसके कारण गरीबी अुत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।

मनुष्यकी बिलकुल आवश्यक और प्राथमिक आवश्यकताअें हैं: (१) अन्न (२) कपड़ा और (३) घर। अन्न तो गांवोंमें पैदा किया ही जाता है, लेकिन जैसा अूपर कहा गया है वह अैसा नहीं जिसमें सब लोगोंको पूरा काम-धंधा मिल सके। अिसलिअे यह जाहिर है कि दूसरी प्राथमिक आवश्यकताकी पूर्ति करनेवाला कपड़ा-अुद्योग भी गांवोंको ही सौंप दिया जाय। अुससे अधिकांश जनताको काम-धंधा मिल जायगा और धनका समान बंटवारा होगा। गांवोंमें लोगोंकी खरीद-शक्ति बढ़ जायगी और वे दूसरी अुपभोग्य वस्तुअें खरीदने लायक हो जायंगे तथा अिस तरह दूसरे धंधोंको बढ़ानेमें मदद करेंगे।

अिसलिअे दूसरी पंचवर्षीय योजनाको कपड़ा-अुद्योग गांवोंमें ले जानेकी योजना करनी चाहिये और अिस बातकी कोशिश होनी चाहिये कि पांच सालमें हरअेक आदमीको कुछ अुपयोगी काम-धंधा मिल जाय और वह अितना कमाने लगे कि अपने पांवों पर खड़ा हो जाय। अिससे लोगोंमें स्वावलंबनकी भावना आयगी और शहरोंमें आबादीकी भीड़-भाड़ कम होगी। बहुतसे शिक्षित लोगोंको भी गांवोंमें ही अुपयोगी काम-धंधा मिल जायगा।

अिसके साथ-साथ प्रौढ़-शिक्षा भी चलनी चाहिये, ताकि हरअेक आदमी पढ़ने और लिखने लगे। जब तक लोग खुद पत्र-पत्रिकायें नहीं पढ़ने लगते और अुनके आसपास जो विविध जानकारी फैली पड़ी है, अुसे खुद नहीं सीखने लगते, तब तक केवल प्रचारसे कुछ नहीं हो सकता।

गांववालोंको अुपयोगी काम-धंधा देनेके और भी कअी रास्ते हैं। अुदाहरणके लिअे, धान-कुटाअी, खाद्य तेल पेरना आदि, जो अभी शहरोंमें मशीनोंके जरिये किये जा रहे हैं लेकिन जो गांवमें हाथ-मेहनत और सादे औजारोंके जरिये आसानीसे किये जा सकते हैं।

अंग्रेजोंके शासनकालमें हमारे गांवोंके जिस कपड़ा-अुद्योगको गांवोंसे अुठाकर अिंग्लैंड ले जाया गया और जिसने अिंग्लैण्डको समृद्ध बनाया, अुसे अब दुबारा गांवोंको समृद्ध बनानेके लिअे गांवोंमें ही पहुंचा देना चाहिये।

(अंग्रेजीसे) सी० डी० पटेल

www.vinoba.in

मैं बी० सी० जी० का विरोधी क्यों — पांच कारण

(१)

विश्व-स्वास्थ्य-संस्था (डब्ल्यु-अेच-ओ) के कोपेनहेगन-स्थित क्षय-रोग संशोधन कार्यालय द्वारा, भारतमें बी० सी० जी० के टीकेका जो काम हुआ है, अुसके परिणामोंके संबंधमें तैयार की गयी प्राथमिक रिपोर्टके पहले पैराग्राफका अेक हिस्सा यहां दिया जाता है:

"विश्व-स्वास्थ्य-संस्था और 'युनीसेफ' के आश्रयमें कार्यान्वित बी० सी० जी० के टीकेके अिन कार्यक्रमोंके मूल्याकंनमें ज्यादा अच्छा तो यह होगा कि क्षय-रोगके विस्तारमें हुअी कमीका प्रमाण बताया जाय। लेकिन यह तो अेक दीर्घ काल-व्यापी कार्य होगा। साथ ही वह अितना कठिन और खर्चीला होगा कि अव्यावहारिक जान पड़े। अिसके सिवा क्षय-रोगमें आजकल जो कमी प्रायः सर्वत्र होती हुअी नजर आ रही है अुसमें अिन कार्यक्रमोंका ठीक कितना हिस्सा है, यह तो शायद ही कभी जाना जा सके।"

अिस स्वीकृतिके बाद रिपोर्ट कहती है कि "अुक्त कार्यकी कठिनाअीके कारण यहां हम अिस मुहिममें जिन टेकनिकल पद्धतियोंका अुपयोग हुआ अुनके ही मूल्यांकनका अपेक्षाकृत आसान काम करेंगे और अुसमें हमारा अुद्देश्य भूतकालमें जो कुछ किया गया है अुसकी नोंध लेना नहीं, बल्कि भावी कार्यके लिअे मार्ग-दर्शन पाना होगा।"

अिस मुद्दे पर जो कुछ कहा गया है, वह अिस प्रकार है:

"भारतमें सामुदायिक प्रमाण पर टीका लगानेकी मुहिमसे पैदा होनेवाली 'अेलर्जी' न केवल भिन्न भिन्न व्यक्तियोंमें भिन्न भिन्न बल्कि औसतकी दृष्टिसे स्वाभाविक छूतसे पैदा होनेवाली 'अेलर्जी' की तुलनामें बहुत कमजोर भी मालूम हुअी है। सच तो यह है कि कअी समुदायोंमें वह अभीष्ट माने गये स्तरसे बहुत नीचे है।

"अैसे परिणाम क्यों आये, अिसका कोअी अेक कारण नहीं बताया जा सकता।

"लसीको प्रकाश दिखाकर अुसके गुणको सुधारनेकी बातको केवल अेक सहायक कारण माना जा सकता है। मुहिमके परिणामोंमें पायी गयी ध्यानपात्र विविधता सूचित करती है कि लसीका अुपयोग और व्यवहार किस तरह किया गया, अिस बातसे संबंधित कोअी कारण ही अुक्त परिणामोंके लिअे अुत्तरदायी है।"

(२)

बी० सी० जी० की सारी योजना जिस आधार पर खड़ी है, वह यह है कि अूपर जिस 'अेलर्जी' का अुल्लेख हुआ है वह रोगसे रक्षाकी स्थितिके तुल्य है, फिर चाहे वह रक्षा कितनी भी मर्यादित क्यों न हो। नीचे टोपले और विल्सनकी 'प्रिन्सिपल्स ऑफ् बेक्टीरियालाजी अेन्ड अिम्युनिटी' नामक पुस्तकसे अेक अंश दिया जाता है, जो अिस संबंधमें विचारणीय है:

"हम बी० सी० जी० के टीकेसे लाभकारी परिणाम होते हैं अैसा नहीं मानते; लेकिन बहसके लिअे अैसा मान लें तो भी हमें अिस बातका निर्णय करना होगा कि व्यवहारमें अुसका क्या मूल्य होगा। . . . कालमेटने खुद यह सलाह दी थी कि ३, ७ और १६ वर्षकी अुम्रमें टीका दुबारा लगाया जाना चाहिये। अगर टीका दुबारा न लगाया जाय तो पहले टीकेसे मिली हुअी सुरक्षा — यदि मिली हो तो — अेक-दो सालमें कम होते-होते खतम हो जायगी। दूसरी ओर यदि यह टीका बार-बार लगाया गया तो अुसमें यह खतरा है कि जिस मरीजमें क्षय-रोगका बीज मौजूद है, अुसमें 'अेलर्जी' की तीव्र प्रक्रिया अुत्पन्न होगी जिसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं।"

(३)

नीचे अेक बहिनके पत्रका अेक अंश अुद्धृत किया जाता है, जिसे मैं व्यक्तिगत रूपमें नहीं जानता:

"बी० सी० जी० के टीके पर आपकी किताब मैंने अभी पढ़ी। अगर मैंने अुसे कुछ माह पहले पढ़ा होता तो अपनी ६ और २ सालकी दो बच्चियोंको मैंने यह टीका कभी न लगाने दिया होता। यह तबकी बात है जब चार-पांच माह पहले यह मुहिम नीलगिरिके अिलाकेमें चल रही थी। यह तो हम लोगोंको पत्रोंमें प्रकाशित आपके लेख पढ़कर मालूम हुआ कि टीकेसे पायी जानेवाली सुरक्षाकी अवधि केवल दो सालकी है। बी० सी० जी० का प्रचार करनेवाली मोटरगाड़ियोंके लाअुड-स्पीकरों पर यह बात कभी नहीं बतायी जाती। अगर लोगोंको यह मालूम हो कि सुरक्षा अितने कम समयके लिअे है और दुबारा टीका लगाना अुचित नहीं है, तो निश्चित है कि कोअी भी अपने बच्चोंको बी० सी० जी० का टीका नहीं लगवायेगा।"

(४)

नीचे ब्रिटेनके स्वास्थ्य-मंत्रालयके पत्रसे अेक अुद्धरण दिया जाता है:

"आप देखेंगे कि हमने धीरे धीरे बी० सी० जी० के टीकेकी अपनी योजनाका क्षेत्र बढ़ाया है; लेकिन जब तक मौजूदा मेडिकल रीसर्च कौंसिल द्वारा अुसकी क्षमताकी जांचके लिअे जो प्रयोग किये जा रहे हैं, वे पूरे नहीं हो जाते — अिस संबंधमें बीचके समयके लिअे अेक अस्थायी रिपोर्ट शीघ्र ही प्रकाशित की जायगी — तब तक हमें अुसके मूल्य और अुपयोगिताका ठीक ठीक अनुमान होना संभव नहीं है। फिलहाल टीकेके कार्यक्रमको बढ़ानेका हमारा कोअी विचार नहीं है।"

(५)

नीचे दिया जा रहा अुद्धरण डॉ० आर० सी० वेबस्टर द्वारा ५ मार्च, १९५५ के 'लेन्सेट' में लिखित अेक पत्रसे लिया गया है:

"प्रो० हीथ कहते हैं (१२ फरवरी) कि 'अिस बातका काफी मजबूत प्रमाण है कि बी० सी० जी० क्षय-रोगकी छूतके खिलाफ प्रतिकार-शक्ति बढ़ाता है, यद्यपि अिसका आंकड़ोंमें सबूत पाना मुश्किल है।' वे क्षय-रोगसे बचाव और 'अेलर्जी' के विषयमें हमारा अज्ञान स्वीकार करते हैं, लेकिन यह भी कहते हैं कि 'अुक्त लसीके ये स्वीकृत लाभ अितने काफी हैं कि अुसका अुपयोग अुचित माना जाना चाहिये।' सवाल यह है कि क्या ये लाभ सचमुच अधिकारी व्यक्तियों द्वारा अितने स्वीकृत हैं? यह बात अितने महत्त्वकी नहीं है कि लसी लोगोंके शरीरमें आसानीसे भरी जा सकती है और बहुत सस्ती है; बुनियादी सवाल, जिसका हमारे पास कोअी अुत्तर नहीं है, यह है कि क्षय-रोगसे बचावके अेक प्रमाणकी तरह क्या अिंजेक्शनसे त्वचा पर होनेवाली प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया सचमुच अितनी महत्त्वपूर्ण है जितनी बी० सी० जी० के हिमायती अुसे मानते हैं। आखिर हमें अिस बातका खयाल करना चाहिये कि त्वचा पर यह प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया और भी कअी रोगोंमें दिखती है, लेकिन अुनके मामलेमें अैसा कोअी नहीं कहता कि अुससे रोगसे बचाव सूचित होता है। अैसी स्थितिमें, जब कि हमें अुनके हितकारी परिणामोंका कोअी पूरा ज्ञान नहीं है, क्या यह अुचित है कि हम माता-पिताओंसे अपने बच्चोंको अैसे अिंजेक्शन लगानेको कहें जो बहुतोंमें

www.vinoba.in

अहितकर स्थानीय प्रतिक्रिया अुत्पन्न कर सकते हों और जिनमें, कितना भी कम क्यों न हो, सर्वसामान्य बीमारीके पैदा होनेका खतरा है।"

मद्रास, ७-८-'५५ च० राजगोपालाचार्य

(अंग्रेजीसे)

हरिजनसेवक

२७ अगस्त १९५५

आर्थिक विचारमें दुःखद भूल

छोटे पैमानेके ग्रामोद्योगों और द्वितीय पंचवर्षीय योजनामें अुनके स्थानके विषयमें हुअी चर्चाके दौरानमें अेक प्रसिद्ध अर्थ-शास्त्री मित्रने कहा कि हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि अिन ग्रामोद्योगोंको अैसी योजनामें स्थान मिलनेवाला है, जिसका मुख्य लक्ष्य बड़े पैमानेके भारी अुद्योगोंका विकास है। चर्चाका मुद्दा यह था कि ग्रामोद्योग किस अर्थमें द्वितीय पंचवर्षीय योजनाका **अभिन्न** अंग हैं? योजनाकी रूपरेखा अिस मुद्देका नीचेके शब्दोंमें वर्णन करती है:

> "अिसलिअे, दूसरी पंचवर्षीय योजनाकी बुनियादी नीति अेक ओर बुनियादी अुद्योगों, यातायात और खानोंके विकास पर बड़ी बड़ी रकमें लगानेकी और दूसरी ओर रोजके अुपयोगकी चीजोंकी पूर्ति पर कोअी रोक लगाये बिना अुद्योगके दूसरे क्षेत्रोंके लिअे पूंजीकी जरूरतोंमें यथा-संभव किफायतशारी करनेकी होनी चाहिये। अिस नीति पर अमल करनेके लिअे यह जरूरी है कि मौजूदा अुद्योगोंकी क्षमताका अधिकसे अधिक अुपयोग करनेके लिअे और कम पूंजीवाले या छोटे पैमानेके अुद्योगोंमें अुत्पादन बढ़ानेके लिअे पूरा प्रयत्न किया जाय। चूंकि रोजके अुपयोगकी चीजोंके विषयमें अतिरिक्त मांग अन्नके संबंधमें होगी, अिसलिअे अैसी योजनायें अपनानेकी ओर ध्यान दिया जाना चाहिये, जो कम पूंजीमें खेतीके अुत्पादनको शीघ्र बढ़ा सकें।"

अिस तरह योजनाकार छोटे पैमानेके अुद्योगोंके अिस मुख्य और अनोखे गुणको समझ गये हैं कि अुनमें कम पूंजीकी जरूरत होती है और वे तत्काल विशाल मात्रामें राष्ट्रको रोजाना अुपयोगकी चीजें दे सकते हैं।

लेकिन अुन अुद्योगोंके बारेमें जो सबसे महत्त्वकी बात योजनाकार भूल जाते हैं, वह यह है कि ये भारी संख्यामें लोगोंको काम देनेकी शक्ति रखते हैं और खरीद-शक्तिका न्यायपूर्ण बंटवारा करनेका अुम्दा गुण भी रखते हैं। अिसके अलावा, ये अुद्योग प्रजाके अैसे भागकी हालतको सुधारते हैं, जिसकी तरफ सबसे पहले ध्यान दिया जाना चाहिये।

छोटे पैमानेके अुद्योगोंका यह गुण बड़े महत्त्वका है। हम समाजवादी ढंगकी व्यवस्थाके लिअे योजना बनाना चाहते हैं। अिसके लिअे पहली जरूरत अिस बातकी है कि हमारे तमाम लोगोंको तत्काल कामसे लगाया जाय। केवल आलसी और बेकार या अर्ध-बेकार लोगोंको ही काम नहीं करना चाहिये, बल्कि अुन लोगोंको भी कामसे लगाना चाहिये, जो बिना कमाअी हुअी आय पर जीते हैं। दूसरी श्रेणीके लोगोंका अस्तित्व पूंजीवादी या मालकियतकी वृत्तिको पोषण देनेवाली अर्थ-रचनामें ही संभव हो सकता है।

हमारे देशमें, जो गरीब और पश्चिमी आर्थिक विचारोंके अनुसार पिछड़ा हुआ कहा जा सकता है, विशाल पैमाने पर फैले हुअे आलस्य, लादी हुअी बेकारी और अर्ध-बेकारीकी तुलनामें बिना कमाअी हुअी आयकी बुराअी कम मात्रामें है। अिसलिअे किसी भी योजनाका तात्कालिक लक्ष्य अिस आलस्य और बेकारीको दूर करनेका होना चाहिये; अगर हमारा ध्येय समाजवादी व्यवस्था कायम करनेका हो, सामाजिक न्याय जिसका मुख्य अुद्देश्य होता है, तब तो अैसा करना और भी जरूरी हो जाता है।

अिसलिअे यह कहना सही नहीं होगा कि द्वितीय पंचवार्षिक योजनाका सच्चा अुद्देश्य भारतमें भारी अुद्योगोंकी और अुनके फलस्वरूप जन्म लेनेवाले अुद्योगवादकी स्थापना करना है, हालांकि यह माना जा सकता है कि योजना अपने कार्यक्रममें कुछ तथाकथित भारी अुद्योगोंके विकासकी व्यवस्था करती है। लेकिन अगर हम भारतके लिअे बनाअी जानेवाली योजनाके विशाल और व्यापक अुद्देश्यों और ध्येयोंका खयाल करें, तो हमें स्वीकार करना होगा कि ये भारी अुद्योग — यद्यपि वे अनुचित रूपमें हमारी पूंजी और ध्यानकी बहुत भारी मात्राका दावा करते हैं — अिन ध्येयोंको पूरा नहीं करते। हमारी प्रजाके बुनियादी राष्ट्रीय अुद्योग अर्थात् छोटे पैमानेके ग्रामोद्योग, जो विशाल मात्रामें रोजाना अुपयोगकी चीजें पैदा कर सकते हैं, अिन ध्येयोंको पूरा कर सकते हैं और आज भी कर रहे हैं। मैं अपनी बात दूसरी तरहसे समझाअूंगा।

गणितकी परिभाषामें कहा जाय तो भारतकी सच्ची समृद्धिके ग्राफ (लेखचित्र) के दो अक्ष हैं; क का अक्ष खेती और गोपालन है और ख का अक्ष यहां-वहां बिखरे हुअे कुछ तथाकथित भारी या मुख्य अुद्योगोंके साथ — जिनके लिअे स्वभावतः भिन्न आर्थिक पद्धतिकी जरूरत होती है — छोटे पैमानेके ग्रामोद्योगोंको बताता है। पिछली कुछ सदियोंसे हमारा दुर्भाग्य यह रहा है कि ख के अक्षको लगभग भुला दिया गया है, जो राष्ट्रकी समृद्धिकी सच्ची अूंचाअी बताता है और अुसे गति प्रदान करता है, और हमारे देशभरमें फैले हुअे ग्रामोद्योगोंकी जगह थोड़ेसे पूंजी-प्रधान और भारी संख्यामें लोगोंको कामधन्धा देनेमें असमर्थ बड़े अुद्योग खोलनेका व्यर्थ प्रयत्न किया जाता रहा है। स्वतंत्र भारतमें यह गलती हमें चलने नहीं देना चाहिये।

अिस गलतीके कारण हमारा आर्थिक विचार खेती और ग्रामोद्योगोंको दो भिन्न आर्थिक प्रवृत्तियां माननेकी दुःखद भूल करता है और अिस तरह न्याय तथा समानताके सच्चे सामाजिक अुद्देश्यकी दृष्टिसे दोनोंको दूषित बनाता है। जैसा कि हम अूपर देख चुके हैं, खेती और अुद्योग अेक ही आर्थिक पद्धतिके दो अभिन्न अंग हैं। अकेली खेती, जब तक अुसे बहुत लम्बे-चौड़े फार्मका रूप देकर बड़े पैमानेके अुद्योग जैसा न बना दिया जाय, आर्थिक दृष्टिसे लाभकारी साबित नहीं हो सकती। लेकिन हमारे देशमें अैसा करना बहुत महंगा और असंभव होगा। और अकेला बड़ा अुद्योग पूंजी और मशीनोंके बल पर बेकारी बढ़ानेवाली और शोषण करनेवाली अर्थ-रचनाका केन्द्रित साधन बन जाता है तथा राष्ट्रके बेकार लोगोंके समूहोंको जमीनका आसरा लेनेके लिअे मजबूर कर देता है; अिससे जमीनकी तंगी और बढ़ जाती है, अुस पर लोगोंके पालन-पोषणका बोझ आवश्यकतासे अधिक पड़ने लगता है और वह आर्थिक दृष्टिसे और भी कम लाभकारी हो जाती है।

अगर हम भारतमें वस्तुतः स्वतंत्र, सुखी और न्यायपूर्ण समाज-व्यवस्था कायम करना चाहते हैं, तो पश्चिमकी औद्योगिक क्रान्ति द्वारा किये गये अुद्योगों और खेतीके अपवित्र विभाजनका तथा हमारे जैसे राष्ट्र पर, जो न तो अुपनिवेशवादी है और न साम्राज्यवादी, अुस विभाजनके जो भयंकर परिणाम होते हैं, अुनका हमें पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिये।

www.vinoba.in

समाजवादी व्यवस्थाके नारेके प्रभावमें बोलनेवाले लोग अिस महत्त्वपूर्ण मुद्देकी ओर ध्यान देते मालूम नहीं होते, जो सर्वोदयी आर्थिक विचारका बुनियादी मुद्दा है। हमारे अर्थशास्त्री भी, जिनमें से अधिकतर लोग पश्चिमी अुपनिवेशवादी और पूंजीवादी तथा आक्रमक और प्रतिस्पर्धावाली आर्थिक पद्धतियोंकी शिक्षा पाये हुअे हैं, यही भूल करते हैं जब वे कहते हैं कि भारतकी पंचवर्षीय योजनाओंका ध्येय देशमें भारी अुद्योगोंकी स्थापना करना है। द्वितीय पंचवर्षीय योजनाको यह भ्रम स्पष्ट शब्दोंमें दूर करना चाहिये और अिस मुद्देको साफ करना चाहिये, अगर हम अपनी भावी प्रगति और विकास सच्चे आर्थिक और शान्तिपूर्ण आधार पर करना चाहते हैं; यही आधार सबको शान्ति और समृद्धिका विश्वास दिला सकता है। अिसीका नाम सर्वोदय है।

१८-८-'५५ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

विकेन्द्रीकरणकी गांधीजीकी कल्पना

अिस शताब्दीकी सामाजिक विचार-धारामें गांधीजीका सबसे बड़ा योग अुनका अुत्पादनके साधनोंके विकेन्द्रीकरणका आग्रह है। अुनके अिस सिद्धान्त पर अब बहुतसे लोग ध्यानपूर्वक विचार करनेके लिअे तैयार हैं, क्योंकि बेकारीकी समस्यासे अुद्धार पानेका वही अेक रास्ता है। वे कहते हैं कि विकेन्द्रीकरण करना अच्छा होगा, क्योंकि देशमें बड़े पैमानेवाले अुद्योगोंके जरिये अुद्योगीकरण करना चाहें तो अुसके लिअे भारी पूंजीकी आवश्यकता होगी। वे यह भी कहते हैं कि बड़े पैमाने पर अुद्योगीकरण करनेका मतलब यह होता है कि हमारे हाथमें विदेशी बाजार होने चाहिये; चूंकि भारत अैसे विदेशी बाजार नहीं प्राप्त कर सकता अिसलिअे विकेन्द्रीकरण ही हमारा अेकमात्र लक्ष्य हो सकता है। दूसरे शब्दोंमें, अगर पूंजीके निर्माण और विदेशी बाजारोंकी प्राप्तिके सवाल हल हो जायं तो बड़े पैमानेवाले अुद्योगीकरणको ही तरजीह देना अुचित होगा।

हमें अिस बातका खयाल होना चाहिये कि विकेन्द्रीकरणके सिद्धान्तको गांधीजीने जिस रूपमें पेश किया है, यह तर्क-पद्धति अुसके लिअे अेक खतरा है। यह मानना गलत होगा कि गांधीजीने अिस सिद्धान्तका प्रतिपादन केवल भारतकी परिस्थितियोंके विचारसे किया है। अिसके विरुद्ध, गांधीजीका विकेन्द्रीकरणका सिद्धान्त, बड़े पैमानेवाले अुद्योगीकरणका युग अपने साथ जो अनेक राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक बुराअियां लाया है, अुनके बारेमें अुनकी गहरी और दूरदर्शी समझका परिणाम था।

बर्ट्रेन्ड रसल गांधीजीके विकेन्द्रीकरणके विचारके बारेमें अिस प्रकार कहते हैं:

> "दुनियाके जिन हिस्सोंमें अुद्योगवाद अभी आरंभिक अवस्थामें है, अुनमें अुन दुष्परिणामोंको अभी भी टाला जा सकता है जिन्हें हमें भोगना पड़ा है। अुदाहरणके लिअे, भारत परंपरासे ग्राम-समाजोंका देश रहा है। अगर अुनकी अिस जीवन-पद्धतिकी जगह, जिसमें बुराअियां भी हैं, अेकदम और बलपूर्वक अुद्योगवाद और अुसकी ज्यादा बड़ी बुराअियां दाखिल कर दी जायं, तो वह अेक बड़ा अनर्थ ही होगा और अिसके सिवा वह अुन लोगोंको सहन करना होगा जिनका जीवन-मान बहुत ही नीचा है।"

अिसलिअे रसल जिन बुराअियोंकी बात करते हैं अुनकी भयंकरता हमें समझ लेना चाहिये, तभी हम गांधीजीके विकेन्द्रीकरणके विचारका पूरा महत्त्व ग्रहण कर सकते हैं।

चन्द लोगोंके हाथमें राजनीतिक सत्ताके केन्द्रीकरणकी जो बुराअी हम आजकल देख रहे हैं, अुसके मूलमें यह बड़े पैमानेवाला अुद्योगवाद ही है। बड़े पैमाने पर चलनेवाले अुद्योगोंका यह स्वभाव ही है कि आर्थिक शक्ति चंद लोगोंके हाथमें केन्द्रित हो जाती है। पूंजीवादमें यह शक्ति खानगी पूंजीपतियोंके हाथमें केन्द्रित होती है और समाजवादमें वह व्यवस्थापकों, यंत्रविद्याविशारदों और बड़े सरकारी अधिकारियोंके हाथमें चली जाती है या यों कहिये कि वे अुसे हथिया लेते हैं।

किसी राज्यमें सत्ताका अैसा केन्द्रीकरण हो जाय तो वहां लोकशाही असंभव हो जाती है, क्योंकि सत्ताका केन्द्रीकरण लोकशाहीकी कल्पनाके सर्वथा विरुद्ध है। यही कारण है कि गांधीजी पश्चिमकी लोकशाहीके पक्षमें नहीं थे। अुनकी राय थी कि पश्चिमकी लोकशाहीमें लोकशाहीका केवल रूप है; वस्तुतः वह सर्वसत्तावाद पर ही आधार रखती है, क्योंकि अुसमें राजनीतिक सत्ताका भोग चंद लोग ही करते हैं।

राजनीतिक दुष्परिणामोंके सिवा, मनुष्यके व्यक्तित्व पर भी अुद्योगीकरणका काफी बुरा असर होता है। अुद्योगवाद मनुष्यको भूमि और प्रकृतिके साथ बांधनेवाले सूत्रको तोड़ देता है। बड़े-बड़े विपुलायतन यंत्रोंके पार्श्वमें वह अपनेको खोया हुआ महसूस करता है। परिणाम यह होता है कि वह खुद मशीनका अेक पुर्जा-मात्र बन जाता है।

चूंकि अुद्योगीकरण श्रमके विभाजन पर आधारित है, अिसलिअे वह अुसकी आत्माभिव्यक्तिको सीमित करता है। अेडम स्मिथका यह प्रसिद्ध अुदाहरण कि पिन जैसी छोटी चीज भी अेकके बाद अेक ९० हाथोंसे गुजरती है तब कहीं पूरी बनती है, अुद्योगीकरणके अिस दोषको ही पुष्ट करता है। अिस बुराअीके कारण कामकी विविधता चली जाती है, काम करनेवालेको अुसमें अपनी ओरसे कुछ करनेका अवकाश नहीं मिलता और अिसलिअे अुसका रस नष्ट हो जाता है। बेशक, अिस विभाजनसे अुत्पादनकी मात्रा बढ़ती है, लेकिन वह मनुष्यके स्वाभाविक कौशलके पूर्ण विकासमें बाधक होता है।

केवल अितना ही नहीं, मनुष्यकी अेक प्राणीके नाते जो आवश्यकताअें होती हैं, अुद्योगीकरण अुन्हें भी पूरा नहीं करता। प्राणीके नाते मनुष्यको अेक विशेष तापमान, आबहवा, वायु, प्रकाश, गरमी और भोजनकी जरूरत होती है। मनुष्य जहां काम करता है, वहां परिस्थितियां अिस दृष्टिसे अनुकूल हों तो ही वह अपना शारीरिक संतुलन कायम रख सकता है। अुद्योगीकरणमें अुसकी अिन आवश्यकताओंकी अुपेक्षा होती है।

अिसके सिवा अुद्योगीकरण मनुष्यको समुदायमें बांधता है; अुसे व्यक्तिकी तरह न देखकर समुदायके अंशकी तरह देखता है। अिसका अनिवार्य फल यह होता है कि मनुष्यमें सर्वसत्तात्मक प्रवृत्ति बढ़ती है। मनुष्य भूल जाता है कि अुसे आत्म-स्वातंत्र्यका अधिकार है। वह अपने व्यक्तित्वको समुदायकी सत्तामें विसर्जित कर देता है और फलतः अन्तमें समाजके सामुदायिक कल्याणके नाम पर हर तरहका जुल्म और अन्याय सहनेका अभ्यासी बन जाता है।

अुद्योगवादके अमर्यादित अनुगमनसे कुछ अत्यंत हानिकर बुराअियां पैदा होती हैं। सच तो यह है कि वेन, साअिमन, फौरिजर, और खासकर मार्क्स आदि बहुतेरे विचारकों और सामाजिक सुधारकोंने अिन बुराअियोंकी जड़ तक जानकी कोशिश की। वे अिस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अिस बीमारीकी जड़ स्वामित्वकी प्रथामें है; जितनी सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक बुराअियां हैं, वे सब अुत्पादनके साधनोंके वैयक्तिक स्वामित्वसे अुत्पन्न होती हैं। अगर वैयक्तिक स्वामित्वकी प्रथा नाबूद कर दी जाय और अुत्पादनके साधन सामाजिक मालिकीके कर दिये जायं, तो यह सारी खराबी अपने-आप खतम हो जायगी।

www.vinoba.in

लेकिन अिन सुधारकों और खासकर मार्क्सने जो आशा बांध रखी थी, अुसे अनुभवने झूठ ठहराया है। सामाजिक मालिकी कायम होनेके बाद भी ये बुराअियां कअी दूसरे रूपोंमें प्रगट होने लगीं। स्वतंत्रता लुप्त हो गयी और सत्ताकी पागल लालसाने मनुष्यको पशुकी नीची भूमिका पर पहुंचा दिया; अुसकी स्थिति जार्ज आरवेलकी पुस्तक 'अेनिमल फार्म' में वर्णित पशुओं जैसी हो गयी।

तो सवाल यह है कि अिस बीमारीकी जड़ क्या है, अिस सवालके प्रति अिन विचारकोंकी दृष्टिमें गलती कहां थी? अिसमें संदेह नहीं कि बहुतसी बुराअियां स्वामित्वकी प्रथासे पैदा होती थीं। गांधीजीने मार्क्सका यह मत स्वीकार किया। लेकिन वे अेक कदम और आगे बढ़े, अुन्होंने अिस प्रश्नकी परीक्षा ज्यादा गहरे जाकर की। अुनके मतानुसार अिस खराबीका कारण स्वामित्वकी प्रथा तो थी ही, साथ ही अुत्पादनकी पद्धति भी थी।* अपने मानव-प्रेमकी धुनमें मार्क्सने स्वामित्वकी प्रथाका दोष तो देखा, लेकिन अुत्पादनकी पद्धतिके दोष पर अुसकी नजर नहीं गयी। गांधीजीने अुत्पादन-पद्धतिके दोषको भी परखा। अुन्होंने सुझाया कि बड़े पैमानेकी अुत्पादन-पद्धतिकी जगह छोटे पैमानेकी अुत्पादन-पद्धति चलनी चाहिये। यह अुनके विकेन्द्रीकरण-सिद्धान्तका मर्म है।

क्या अिसका यह मतलब है कि वे अुत्पादन-पद्धतिमें विज्ञानका प्रयोग करनेके खिलाफ थे? अिस प्रश्नका अुत्तर देते हुअे अुन्होंने कहा था, "मैं मशीनरीका विरोध नहीं करता, मैं मशीनरीके मोहका विरोध करता हूं।" सच तो यह है कि वे छोटे पैमाने-वाली टेकनिकके विकासमें विज्ञानका प्रयोग करनेकी हिमायत करते थे।

'यंग अिन्डिया' में लिखते हुअे अुन्होंने अेक बार कहा था कि "मैं गृह-अुद्योगोंके लिअे अुपयोगी मशीनोंमें हर तरहके सुधारका स्वागत करूंगा।" क्या वे सब प्रकारकी मशीनरीके खिलाफ हैं —अिस प्रश्नका अुत्तर देते हुअे अुन्होंने कहा था: "मेरा अुत्तर है — बिलकुल नहीं। लेकिन अुसे बेसमझे-बूझे अकारण बढ़ाते रहनेके मैं खिलाफ हूं। मैं मशीनरीकी दिखावटी विजयसे चमत्कृत होनेसे अिनकार करता हूं। लेकिन मैं सादे औजारों और अैसी मशीनरीका स्वागत करूंगा जो व्यक्तिके परिश्रमको बचाये और लाखों झोपड़ियोंका बोझ हलका करे।" (यंग अिन्डिया, १९२६)

* गांधीजी अिस मुद्दे पर मार्क्ससे सहमत तो थे, लेकिन वे अिससे आगे गये और अुन्होंने कहा कि कानूनके शब्दोंमें जिसे स्वामित्व कहा जाता है, वह असलमें संरक्षकता है। जिसके अधिकारमें अुत्पादनके साधन हैं, वह अुनका स्वामी बना रह सकता है और अुसे अिसका अधिकार है बशर्ते कि वह अपनी संपत्तिको समाजकी धरोहर माने और सबके कल्याणके लिअे अुसका यानी अुत्पादनके साधनोंका अुत्तम सामाजिक अुपयोग करे। संक्षेपमें, स्वामित्वका अधिकार नागरिकशास्त्र और नीतिशास्त्र दोनोंमें स्वामीकी विश्वसनीयताके द्वारा नियंत्रित होता है। अिसलिअे गांधीजीने अुत्पादनके साधनोंके कानूनी स्वामित्वके बजाय अिस बात पर ज्यादा जोर दिया कि प्रत्येक नागरिकको अैसा विश्वसनीय बननेका प्रयत्न करना चाहिये। बेशक स्वामित्व न्यायसंगत होने चाहिये और अुत्पादनके साधन समानतापूर्वक वितरित होने चाहिये। अिसका अुत्तम अुपाय यह था कि अुद्योगोंकी और कृषिकी विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्थाका संघटन किया जाय। अिस अर्थ-व्यवस्थामें अधिकांश लोग गांवोंमें छोटे ग्राम-समाज बनाकर रहेंगे, जहां अुनके सामाजिक और मानवीय संबंध सीधे और प्रत्यक्ष होंगे।

—म० प्र०

तो हम देख सकते हैं कि गांधीजी मशीनरी मशीनरी है अिसलिअे अुसके खिलाफ थे, अैसी बात नहीं है। मशीनरी और अुसमें विज्ञानके अुपयोगके प्रति अुनका दृष्टिकोण मूलतः भिन्न था। वह मनुष्यके कल्याणकी भावनासे प्रेरित और क्रान्तिकारी था। गांधीजीको अैसी कोअी टेकनिक स्वीकार नहीं है जो मनुष्यको यंत्र बना डालती है, जो अुसकी स्वतंत्रताकी शाश्वत प्रेरणाका नाश करती है और अुसकी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक आजादी पर आक्रमण करती है।

बर्ट्रेन्ड रसल वैज्ञानिक टेकनिकके अुपयोगके विषयमें अिस प्रकार कहते हैं:

> "विज्ञान जहां तक ज्ञान है वहां तक अुसका मूल्य अवश्य माना जाना चाहिये। लेकिन जहां वह टेकनिकसे संबंध रखता है, वहां अुसकी स्तुति या निंदा अिस बात पर निर्भर करती है कि अिस टेकनिकका क्या अुपयोग किया जाता है। अपने-आपमें वह अेक तटस्थ वस्तु है; न अच्छी है और न बुरी। कोअी चीज अच्छी या बुरी कैसे हो जाती है, अिस प्रश्नके विषयमें हमारी अन्तिम धारणाअें जो भी हों अुनका आधार विज्ञान नहीं हो सकता।"

अिसलिअे गांधीजीका मत है कि वैज्ञानिक टेकनिक अुन मूल्योंकी गहरी चेतनासे अनुप्राणित होनी चाहिये, जिनका वह निर्माण करनेवाली है। दूसरे शब्दोंमें टेकनिकके विकास और पूर्णताका सामान्य अुद्देश्योंके साथ पूरा मेल होना चाहिये। बड़े पैमानेवाली टेकनिक अिन सामान्य अुद्देश्योंकी जड़ पर प्रहार करती है। अिसीलिअे गांधीजी अुसे तनिक भी आश्रय नहीं देते।

(अंग्रेजीसे) अेन० प्रसाद

अुड़ीसामें विनोबा — ९

१

अखबारोंमें महान् वैज्ञानिक आअिन्स्टीनका आखिरी पत्र प्रकाशित हुआ था, जिसमें अुन्होंने कहा था कि सरकारको अणुबम बनानेकी अिजाजत देनेमें अुन्होंने भूल की थी। अिसका जिक्र करते हुअे डाबूगांवकी प्रार्थना-सभामें विनोबाजीने कहा, "वैज्ञानिकोंको समझना चाहिये कि हमें अपनी बुद्धिका अुपयोग विनाशके लिअे नहीं, बल्कि दुनियाके कल्याणके लिअे करना चाहिये। भगवानने हमें बुद्धि, शक्ति या सम्पत्ति दी है। वे (वैज्ञानिक) माता-पिताकी हैसियतमें हैं। अिसलिअे अुनका यह कर्तव्य हो जाता है कि जो कमजोर हैं या अल्प बुद्धिवाले हैं अुनकी रक्षा करें। अगर कल माता-पिता अपने बच्चोंको लूटने लग जायं तो क्या दुनियामें अुनकी अिज्जत रहेगी? वैज्ञानिकोंको अपनी बुद्धिका अुपयोग अैसी खोज करनेमें करना चाहिये जिससे कि फसल बढ़े, बीमारियां मिटें और समाज मांसाहारसे मुक्त हो जाये।" आगे चलकर अुन्होंने कहा, "आज दुनियाके किसी भी देशमें सच्चा स्वराज्य नहीं है। सारी दुनिया सच्चे स्वराज्यकी, शान्तिकी, खोजमें है। लेकिन अुसे रास्ता नहीं मिल रहा है। हम मानते हैं कि हमारे यहांके अपढ़ किसानोंने ग्रामदान देकर दुनियाके सामने रास्ता खोल दिया है।"

पापड़ाहान्डी गांवके वीरोंने १९४२ के आन्दोलनमें बहुत पराक्रम दिखाया था। जिस दिन अुस गांवमें पड़ाव था, अुस दिन विनोबाजी वह स्थान देखने गये जहां पर गोली चली थी और तेरह व्यक्ति शहीद बन गये थे। अुस गांवकी वीर-गाथाका स्मरण करते हुअे अुन्होंने ग्रामवासियोंसे कहा, "यद्यपि सारी दुनिया आपके पराक्रमकी कहानी नहीं जानती है, तो भी भगवानके पास आपका पराक्रम पहुंच गया है। अिसलिअे और कहीं पहुंचनेकी जरूरत नहीं है। आपके जैसे असंख्य वीरोंके त्यागके कारण देशको स्वराज्य प्राप्त हुआ है। लेकिन अभी वह स्वराज्य दिल्ली और

www.vinoba.in

कटक तक ही पहुंचा है। गांवमें अभी तक स्वराज्यका अुदय नहीं हुआ है। अंग्रेजोंकी मालकियत तो मिट गयी है, लेकिन अभी तक छोटे छोटे मालिक कायम हैं। जब गांव-गांवसे मालकियत मिट जायगी तो सच्चा स्वराज्य स्थापित होगा।"

नवरंगपुरकी सभामें तालीमके बारेमें बोलते हुअे विनोबाजीने कहा, "हम चाहते हैं कि हमारे लड़के अैसे हों कि जो अिधर ब्रह्मविद्याका गान करें और अुधर हाथमें झाड़ू लेकर भंगी-काम करें या खेतोंमें मेहनत करें। आजकी विद्यामें न अुद्योग है, न ब्रह्मविद्या। अुद्योगके अभावका परिणाम यह होता है कि शिक्षित लोग हाथसे काम करना नहीं जानते हैं। और ब्रह्मविद्याके अभावका परिणाम यह होता है कि शिक्षित लोग विषयभोग-परायण और अिन्द्रियोंके गुलाम बन रहे हैं।"

स्त्री-पुरुषकी समानताके बारेमें अुन्होंने कहा, "आज पुरुष मानते हैं कि रसोअी बनाना तो स्त्रियोंका काम है और हमारा काम है खाना। लेकिन हम चाहते हैं कि जो भी खाता हो अुसको रसोअीका ज्ञान होना चाहिये। जब मालिक-मजदूर, अूंच-नीच, गरीब-अमीर यह सारे भेद मिटेंगे तब सच्चा स्वराज्य होगा। अुसके साथ स्त्री-पुरुषके अधिकार भी समान होने चाहिये। आज तो पति अपनी पत्नीसे कहता है कि मैं तेरा देवता हूं और तू मेरी दासी है। लेकिन अिसके आगे यह नहीं चलेगा। पति अपनी पत्नीका देवता बनेगा, तो पत्नी अपने पतिकी देवी बनेगी; पत्नी पतिव्रता रहेगी और पति पत्नीव्रत रहेगा। आज तक जो अिकतरफा धर्म चला है, वह अब नहीं चलेगा।"

विचार और प्रेमकी महिमा बताते हुअे अुन्होंने कहा कि विचार हमारा भगवान है और प्रेम भक्त है। जहां भगवान और भक्त दोनों अेक हो जाते हैं, वहां पर विजय निश्चित हासिल होती है।

कोरापुट जिलेमें अब तक तेरह हजार दाताओं द्वारा ८०,००० अेकड़ भूमिका दान मिला है और २०३ पूरे गांव मिले हैं।

१४-७-'५५

२

दंडकारण्यके अिस परित्यक्त प्रदेशमें, दुनियामें रहते हुअे भी दुनियासे दूर, पालूर नामका अेक छोटासा गांव है। यदि दुनियावाले वहां जानेका सोचते तो भी व्याघ्रादि पशुओंसे भरे हुअे अरण्य और पर्वतमाला आदिके रूपमें सारी प्रकृति अुन्हें रोकती। फिर भी अगर कोअी आगे बढ़नेकी हिम्मत करता, तो अिन बरसातके दिनोंमें अपने समस्त वैभवको लेकर बहनेवाली झंझावती और चंपावती जैसी नदियां अुसे आगे नहीं बढ़ने देतीं। लेकिन जिसके बढ़ते हुअे पैरोंके साथ धर्मचक्र घूमने लगता है, अुसका सर्वत्र संचार हो सकता है।

विनोबाजी पालूर गये। नित्यक्रमके अनुसार प्रार्थना-सभा हुअी और अुसके पश्चात् ग्रामदानमें मिले हुअे आसपासके दस गांवोंकी भूमिका अुनके हाथोंसे पुनर्वितरण हुआ। पहले जिसके पास बारह अेकड़ जमीन थी अुसे चार अेकड़ मिल रही थी और जिसके पास कुछ नहीं थी अुसे पांच अेकड़ मिल रही थी। किसी छोटेसे गांवमें पहले छः सात व्यक्तियोंके पास ही जमीन थी, लेकिन अब सबको जमीन मिल रही थी। विनोबाजीने गांववालोंसे कहा, "आप पर अीश्वरकी बड़ी कृपा है, क्योंकि आपको अैसी अच्छी बुद्धि सूझी है।" हर गांवके नायकको गीता-प्रवचन दिया गया। दुनियासे बिदा होनेके पहले भगवान सहस्ररश्मिने भी बादलोंके परदेको हटाकर अिस मंगल समारोहको देख ही लिया।

भूमि-क्रान्तिकी गर्जना देश-विदेशके यात्रियोंको आकर्षित कर रही है, जिनमें रवीन्द्रनाथ टैगोरके साथी डॉ० अमिय चक्रवर्ती भी थे, जो अिन दिनों अमेरिकाके बोस्टन विद्यापीठमें अध्यापनका काम कर रहे हैं। पालूरकी सभाके पश्चात् डॉ० चक्रवर्तीने विनोबाजीसे कहा "यह गांव दुनियासे बिछुड़ा हुआ है, फिर भी सारी दुनियाके साथ अुसका संबंध कैसे है?"

विनोबाजीने मुस्कराते हुअे जवाब दिया, "अिसीलिअे कि अहिंसक रेडियो अेक्टीव्हिटी काम कर रही है।"

डॉ० चक्रवर्तीने आगे चलकर कहा, "जब गांधीजी आये तो दुनिया कहने लगी कि भारतमें अेक चमत्कार हो रहा है। लेकिन अब फिर दूसरा चमत्कार हो रहा है। यहां पर पूरेके पूरे गांव दानमें मिल रहे हैं, यह सारा अभूतपूर्व-सा है। कोअी अिसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था। और मुझे यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि भूदान न सिर्फ अेक नैतिक आंदोलन है बल्कि व्यावहारिक भी है। भारतका संदेश फिरसे सुनाअी दे रहा है, जिसका असर भारतकी सीमाओंके बाहर भी होनेवाला है। शायद आप जानते नहीं होंगे कि पश्चिममें और खासकर वहांके विद्यापीठोंमें आपके बहुतसे अनुयायी हैं। आज सारी दुनिया अेक राहकी खोजमें है।"

डॉ० चक्रवर्तीने सवाल किया कि कम्युनिस्टोंका भूदानके प्रति क्या रुख है?

विनोबाजीने जवाब दिया, "आरंभमें वे कुछ विरोध करते थे, लेकिन अिन दिनों काफी अनुकूल हो गये हैं। मैं देख रहा हूं कि अुनके दिलमें परिवर्तन हो रहा है। वे हृदय-परिवर्तनमें विश्वास नहीं करते हैं। परंतु मैं अुनसे कहता हूं कि आप खुद भी हृदय-परिवर्तनकी अेक मिसाल हैं। आपने मार्क्सकी किताब पढ़ी और आपका हृदय-परिवर्तन हो गया।"

अिस पर डॉ० चक्रवर्तीने कहा, "यदि अुनमें परिवर्तन हुआ तो वे सारी दुनियामें अुनके अपने लोगोंका परिवर्तन करानेमें सहायक होंगे।"

अिसके बाद अुन्होंने कहा, "कभी-कभी दिलमें आता है कि महापुरुषोंके रहते तो बहुत काम होता है, परंतु अुनके बाद क्या होगा?"

विनोबाजीने जवाब दिया, "अक्सर अैसा होता है कि शिष्योंकी प्रतिभा गुरुके रहते चमकती नहीं है। परंतु गुरुके जानेके बाद वे महान कार्य करते हैं। प्रभु अीसाके शिष्योंके साथ यही हुआ।"

डॉ० चक्रवर्तीने कहा, "मैं अब अमेरिका वापस जा रहा हूं, तो अमेरिकावालोंको आपका क्या संदेश सुनाअूं?"

विनोबाजीने कहा, "वहांके लोग तो हर अितवारको चर्चमें जाकर शांतिका संदेश सुनते हैं। लेकिन अुन्होंने अपने जीवनका अिस तरह बंटवारा कर लिया है कि वे मानते हैं कि अीसा-मसीहकी सिखावन व्यक्तिके लिअे लाभदायक है, परंतु समाजके लिअे लाभदायक नहीं है। अब अुन्हें समझना चाहिये कि जो चीज व्यक्तिके लिअे कल्याणकारी है, वही समाजके लिअे भी कल्याणकारी है। वे तो हमेशा अीसामसीहके ये वचन सुनते हैं— 'बुराअीका मुकाबला बुराअीसे मत कीजिये।', 'दूसरोंके साथ अिसी तरह पेश आअिये जिस तरह आप चाहते हैं कि वे आपके साथ पेश आवें।' मैं तो यही चाहूंगा कि वे अच्छे अीसाअी बनें।"

www.vinoba.in

बिदा लेते समय डॉ० चक्रवर्तीने कहा, "पंडित नेहरू आन्तरराष्ट्रीय क्षेत्रमें जो काम कर रहे हैं, वह बहुत अच्छा है। परंतु मैं देख रहा हूं कि अुनकी शक्तिकी जड़ यहां पर है। हम जहां कहीं रहेंगे आपका काम करेंगे।"

दूसरे दिन नारायणपटणाकी सभामें विनोबाजीने कहा, "आपके गांवका नाम तो बड़ा सुंदर है। वैसे परमेश्वरके नाम तो अनेक होते हैं, परंतु हरअेक नाममें कोअी खूबी रहती है। परमेश्वर सर्वत्र वास करता है, परंतु नरोंके हृदयमें वास करनेवाले परमेश्वरको नारायण कहते हैं। नारायणके मानी हुअे समाज देवता। शास्त्रोंमें लिखा है कि कलियुगके लोग नारायण-परायण होंगे। 'कलौ खलु भविष्यन्ति नारायणपरायणाः।' अिसका मतलब है कि कलियुगमें समाज-सेवा, दुःखितोंकी सेवा ही सर्वश्रेष्ठ भक्ति होगी। हमें समझना चाहिये कि भगवान्‌के दर्शनके लिअे काशी या जगन्नाथपुरी जानेकी जरूरत नहीं है। समाज-सेवामें ही भगवान्‌के दर्शन हो सकते हैं। जो भगवान् खाता-पीता है, अुसको भूखा रखकर पत्थरकी मूर्तिके सामने नैवेद्य चढ़ाना कोअी भक्ति नहीं है। अिसीलिअे आज भूखोंकी भूख मिटाना, दुःखितोंका दुःख मिटाना, गिरे हुअे लोगोंको अूंचा अुठाना और अज्ञानियोंको ज्ञान देना यही भक्ति है।"

सुख और अुसकी प्राप्तिके साधनोंके बारेमें बोलते हुअे विनोबाजीने लक्ष्मीपुरकी सभामें कहा, "आजकल जीवनमान बढ़ानेकी ही बात सोची जाती है। परंतु हम कहते हैं कि चिंतनका मान बढ़ना चाहिये। जहां पर जीवनका मान बहुत गिरा हुआ है, वहां पर अुसे अूपर अुठाना ही चाहिये। परंतु यह समझनेकी जरूरत है कि केवल साधनोंसे या अुपकरणोंके बढ़नेसे सुख नहीं बढ़ता है। घरमें खूब चीजें आयेंगी तो हम सुखी होंगे, यह खयाल गलत है। जैसे तरकारीमें थोड़ा नमक हो तो स्वाद बढ़ता है, लेकिन नमककी मात्रा चाहे जितनी बढ़ाते चले जाओ तो स्वाद बढ़ता जायेगा, यह खयाल गलत है। अिसीलिअे आध्यात्मिक भावना जाग्रत रखनी चाहिये और अुसके साथ-साथ जीवनका स्तर अुन्नत करनेकी कोशिश करनी चाहिये। हमें विश्वास है कि हिन्दुस्तानमें जो आध्यात्मिक भावना है अुसके कारण और वैज्ञानिक युगकी मांगके कारण हिन्दुस्तानके कुल गांव परिवार बनेंगे और हिन्दुस्तानसे जमीनकी मालकियत मिट जायगी।"

कोरापुट जिलेमें अब तक २५० और अुड़ीसामें ४०० पूरे गांव मिले हैं।

४-८-'५५ नि० दे०

विचारणीय बात

बम्बअीसे अेक भाअीने अपने पत्रमें अेक प्रश्न अुठाया है, जिस पर सब लोगोंको विचार करना चाहिये। वे लिखते हैं:

"हम प्रतिवर्ष २६ जनवरी और १५ अगस्तके अपने राष्ट्रीय त्योहार मनाते हैं। अुस दिन जनता आजादीसे राष्ट्रध्वजका मनचाहा अुपयोग करती है। अिसमें ज्यादातर कागजके राष्ट्रध्वजका अुपयोग होता है। कागजके राष्ट्रध्वजका यह अुपयोग खासकर दुकानों और मकानोंको सजानेमें होता है। अुत्सव समाप्त हो जाने पर ये राष्ट्रध्वज चाहे जहां और चाहे जिस तरह रास्तों पर फेंक दिये जाते हैं, जहां वे अकसर अनजाने रास्ता चलनेवालोंके पावों-तले कुचले जाते हैं। हमारी जनताका बड़ा अंश राष्ट्रध्वजका अुपयोग कैसे और कब करना, यह नहीं जानता। अिसीलिअे राष्ट्रध्वजकी अैसी दुर्दशा हमेशा होती है। हमारा राष्ट्रध्वज रास्ते पर कहीं भी फेंक दिया जाय और लोगोंके पांवोंसे कुचला जाय, यह शर्मनाक है। अिसका हल यह होगा कि कागजका राष्ट्रध्वज बनानेका सम्पूर्ण निषेध होना चाहिये, ताकि किसीसे भी जाने-अनजाने अुसका अपमान न हो और अुसकी शानकी रक्षा हो।"

स्वातंत्र्य-पर्वके लिअे लोगोंके अुत्साहका लाभ अुठाकर व्यापार द्वारा कमा खानेके लिअे ही अैसा होता है। मुमकिन है अुस समय अिस बातका विचार न अुसके व्यापारीको आता होगा और न अुससे अपनी दुकान या मकान सजाकर हम अपनी राष्ट्रभक्ति प्रगट करते हैं, अैसा माननेवाले प्रजाजनोंके मनमें आता होगा। अिससे हमारी राष्ट्रीय भावनाके विकासकी कमी प्रगट होती है। हमें अुसे प्रयत्नपूर्वक विकसित करना चाहिये। अैसा ही राष्ट्रगीतके बारेमें भी होता है। कुछ लोगोंको अुसे रागमें गाना नहीं आता, कुछ अुसके शब्दोंका ठीक अुच्चारण नहीं कर सकते, कुछ अुसे गाया जा रहा हो तब शान्तिपूर्वक खड़े नहीं रह पाते, अैसी अनेक कमियां हम लोगोंमें पाते हैं।

अिन सब विषयोंमें सरकार नियम बनाये और तब लोग सुधरें, यह ठीक नहीं है। जनताको यह सब स्वेच्छासे और राष्ट्रप्रेमसे करना चाहिये।

अिस विषयमें शालाअें काफी काम कर सकती हैं। राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगीतके प्रति अुचित आदरकी भावना रखनेका विकास वहां किया जाय तो जरूर अिसमें फर्क पड़ने लगेगा।

२०-८-'५५ म० प्र०

(गुजरातीसे)

सर्वोदय

लेखक: गांधीजी; संपा० भारतन् कुमारप्पा

कीमत २-८-० डाकखर्च ०-१२-०

भावी भारतकी अेक तसवीर

[दूसरी आवृत्ति]

किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १-०-० डाकखर्च ०-५-०

हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण

लेखक: गांधीजी

संपादक: भारतन् कुमारप्पा

कीमत १-८-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४

विषय-सूची

		पृष्ठ
'नींवमें से निर्माण' — ५	मगनभाई देसाई	२०१
दूसरी योजनाके बारेमें अेक सूचना	सी० डी० पटेल	२०२
मैं बी० सी० जी० का विरोधी क्यों — पांच कारण	च० राजगोपालाचार्य	२०३
आर्थिक विचारमें दुःखद भूल	मगनभाई देसाई	२०४
विकेन्द्रीकरणकी गांधीजीकी कल्पना	अेन० प्रसाद	२०५
अुड़ीसामें विनोबा — ९	नि० दे०	२०६
टिप्पणी:		
विचारणीय बात	म० प्र०	२०८

www.vinoba.in